जिहाद का समर्थन

विगत 55 वर्षों से पाकिस्तान इस्लामी आतंकवाद को जिहादियों के रूप में कच्चा माल एवं खाद-पानी प्रदान करता चला आ रहा है। ऐसा उसे इसलिये करना पड़ रहा है क्योंकि 1947 में ही स्वतंत्रता की शर्त के रूप में पाकिस्तान की इस भूमिका का निर्धारण मित्र राष्ट्रों द्वारा अपने युद्ध आतंक के उद्योगों को बनाये रखने और निरन्तर माल खपाने के लिये निश्चित कर दिया गया था।

आखिर कौन नहीं जानता कि तालिबान आतंकवादियों का जनक पाकिस्तान नहीं बल्कि अफगानिस्तान में रूस को शिकस्त देने के लिये अमरीका है। क्या विश्व के नेताओं को यह नहीं मालूम कि जिहाद द्वारा विश्व में कहीं पर भी शांति स्थापित नहीं हुयी है?

शिखर राष्ट्रों की दुर्बलता

यह समझना मुश्किल नहीं कि विश्व के शिखर राष्ट्र एक आतंकवादी राष्ट्र को आतंकवादी कहने का साहस क्यों नहीं जुटा पा रहे हैं? विश्व में मित्र राष्ट्रों के आर्थिक एवं सैन्य आतंक के कारण, उनके सैन्य साजो-सामान एवं गोला-बारूद उत्पादों के एजेंट पाकिस्तान की प्रखरता से आलोचना से प्रत्येक राष्ट्र बचना चाहता है।

परन्तु क्या कुछ राष्ट्रों के आतंक और युद्ध के उद्योगों को प्रोत्साहन देने के लिये, विश्व के 600 करोड़ को जिहादियों और आतंक के हवाले कर दिया जाना चाहिये? और क्या इसीलिए प्रत्येक राष्ट्र को अपनी सुरक्षा के लिये, आतंक और युद्ध से मोर्चा लेने के लिये, सैनिक साजो-सामान, गोला-बारूद पर अपनी सुख-शांति, समृद्धि कुरबान कर देनी चाहिये?

इस्लाम और पाकिस्तान

इस्लाम का एक और पक्ष भी ह, जिसका प्रतिनिधित्व सूफी संत करते हैं। लेकिन इस्लाम की इस धारा को न तो पाकिस्तान के नेतृत्व ने कभी मान्यता दी और न ही पश्चिमी शिखर राष्ट्रों ने इसके प्रचार की कोई आवश्यकता अनुभव की। इस्लाम का प्रेम, शांति और सद्भाव का जो चेहरा है, वह तो पाकिस्तान या शिखर राष्ट्रों के नेताओं को स्वीकार ही नहीं है। इतना ही नहीं, मित्र राष्ट्र भी पाकिस्तान की प्रेम और शान्ति वाली भूमिका अपने राष्ट्रीय एवं औद्योगिक हितों के लिये बाधक मानते हैं। इन सबका विरोध करने का साहस वे राष्ट्र भी नहीं दिखा पा रहे हैं जो स्वयं को आतंकवाद के विरूद्ध बताते हैं। हजरत मुहम्मद साहब ने जिस इस्लाम की शिक्षा दी थी उसमें 'आक्रामकता और असहिष्णुता' के लिए कोई स्थान नहीं था। उन्होंने कहा था कि तुमको 'तुम्हारा दीन मुबारक' और हमको 'हमारा दीन मुबारक'। पाकिस्तान में जिस इस्लाम की वकालत की जा रही है उसमें मानवीय मूल्यों और सद्भाव के लिए कहीं कोई स्थान नजर नहीं आता क्योंकि वह 'यजीदी इस्लाम है। 'यजीद' वह व्यक्ति था जिसने मुहम्मद साहब के खानदान के सभी बच्चे को करबला के मैदान में बेरहमी से मार डाला था।

दोहरे मानदण्डों का परिचय

पाकिस्तान में आतंकवादियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है, यह बात अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, चीन और विश्व के अन्य अनेक राष्ट्रों को मालूम है। परन्तु विश्व का कोई भी प्रमुख राष्ट्र पाकिस्तान पर इस बात के लिए दबाव बनाने के लिए तैयार नहीं है कि वह स्वयं को आतंकवाद से पृथक करे।

विभिन्न राष्ट्रों की सैन्य सुरक्षा के नाम पर कुछ लोगों ने व्यक्तिगत समृद्धि की खातिर अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस, स्वीडन आदि देशों में गोला-बारूद, तोप, टैंक व एटमी हथियारों के कारखाने खोले हुये हैं। अपने-अपने सैनिक सुरक्षा उद्योगों को विकसित कर अंग्रेजों की नोति "फूट डालो और राज करो" के आधार पर भारत के 100 करोड़ ही नहीं बल्कि पूरे विश्व के 600 करोड़ को संघर्ष, अपराध, आतंक और युद्ध का शिकार बनाये रखने के लिये हर प्रकार के हथकण्डे इस्तेमाल करते रहते हैं। इन युद्ध और आतंक के कारखानेदार और उनके बिचालिये सामंतो और इजारेदारों द्वारा आपसी वैमनस्य के शिकार हम सब 100 करोड भारतीयों को अब उनके गुलामी के षडयंत्र से अपने को मुक्त करना ही होगा।

अंग्रेजी भाषा की दासता, उच्चतम न्यायालय में उसकी बाध्यता, आईएएस एवं पीसीएस की परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता, 1924 का 'गोपनीयता का कानून' ; जिसके रहते 100 करोड़ को सूचना का अधिकार अब तक नहीं मिल सका। नौकरशाही एवं जन प्रतिनिधियों द्वारा जन-सेवकों की बजाय शासकों की भूमिका और आर्थिक साम्राज्यवाद, आर्थिक शोषण आदि सभी कुछ परोक्ष रूप से उसी विनाशकारी व्यवस्था के भिन्न-भिन्न अंग एवं परिणाम हैं।